



विश्व हिंदी समाचार

(विश्व हिंदी सचिवालय, मॉरीशस का त्रैमासिक प्रकाशन)



वर्ष : 4

अंक: 16

दिसंबर 2011

हिंदी जगत की ओर से शम्मी कपूर, देव आनंद, जगजीत सिंह, श्रीलाल शुक्ल तथा भूपेन हजारिका को श्रद्धांजलि



शम्मी कपूर

14 अक्टूबर, 2011 की सुबह हिंदी फ़िल्म जगत के एक सूरज को ले डूबी। 21 अक्टूबर को जन्मे शम्मी कपूर का असली नाम शमशेर राज कपूर था। वे पृथ्वीराज कपूर तथा रामशरणी के दूसरे बेटे थे और राज कपूर तथा शशि कपूर के भाई थे। मुंबई के कपूर परिवार में जन्मे शम्मी कपूर को फ़िल्मी अभिनय तो जैसे विरासत में मिली थी।

उन्होंने रंगशाला के ज़रिये अभिनय की दुनिया में कदम रखा। फ़िल्मों में आने से पहले शम्मी कपूर अपने पिता के पृथ्वी थिएटर में जूनियर कलाकार के रूप में 1948 में जुड़े। चार साल तक मंजने के बाद उन्होंने 1952 में पृथ्वी थिएटर छोड़ा।

शम्मी कपूर को सफलता का स्वाद 1957 में मिला जब उनकी फ़िल्म *तुम सा नहीं देखा* को दर्शकों ने खूब सराहा। एक अन्य महत्वपूर्ण वर्ष 1961 रहा जब *जंगली* फ़िल्म पर्दे पर आई। यह उनकी पहली रंगीन फ़िल्म थी। उसके बाद *दिल देके देखो*, *प्रोफ़ेसर*, *कश्मीर की कली*, *एन इविनिंग इन पैरिस*, *ब्रह्मचारी*, *विधाता* आदि सफल फ़िल्मों ने शम्मी कपूर को न सिर्फ़ भारत में बल्कि दुनिया भर में लोकप्रिय बना दिया। शम्मी कपूर को कई पुरस्कार भी मिले हैं जैसे दादा फालके पुरस्कार, राष्ट्रीय गौरव पुरस्कार, लीविंग लिजेंड पुरस्कार आदि।

आज हमारे बीच वे नहीं हैं लेकिन एक अभिनेता के तौर पर उनकी कला हमेशा हमारे दिलों पर राज करेगी। हिंदी जगत और विशेष रूप से हिंदी फिल्म जगत में आने वाला समय ऐसे ही कलाकारों की माँग करता है जो दर्शकों को हँसाने और रुलाने का माददा रखता है।

देव आनंद

गाइड और *हरे राम हरे कृष्ण* जैसी शानदार फ़िल्में देने वाले हिंदी सिनेमा के सदाबहार अभिनेता देव आनंद का शनिवार 3 दिसंबर, 2011 को हृदयाघात के

कारण लंदन में निधन हो गया। वे 88 वर्ष के थे।

देव आनंद ने अपनी फ़िल्मी यात्रा की शुरुआत 1946 में *हम एक हैं* से की हालाँकि उन्हें पहला बड़ा मौका 1948 में *ज़िंदगी* में मिला था। उन्होंने वर्ष 1949 में अपनी प्रोडक्शन कंपनी *नवकेतन इंटरनेशनल फिल्म* की स्थापना की और 35 से अधिक फ़िल्मों का निर्माण किया। उनकी फ़िल्म *गाइड* को सर्वश्रेष्ठ फ़िल्म और सर्वश्रेष्ठ निर्देशक सहित पाँच श्रेणियों में फ़िल्मफ़ेयर अवार्ड पुरस्कार मिले और उस वर्ष ऑस्कार की विदेशी फ़िल्म की श्रेणी में भारत की तरफ़ से यह फ़िल्म भेजी गई थी। भारतीय फ़िल्म जगत में उल्लेखनीय योगदान देने वाले देव आनंद वर्ष 2011 में प्रतिष्ठित पद्म भूषण सम्मान से विभूषित किए गए और 2002 में उन्हें दादा साहेब फालके पुरस्कार प्रदान किया गया। हिंदी फ़िल्म जगत के कई कलाकारों ने उनके प्रति श्रद्धांजलि अर्पित की। हिंदी फ़िल्म जगत में उनका योगदान हमेशा स्मरणीय रहेगा।

चिट्ठी ना कोई संदेस, जाने वो कौन सा देस,

जहाँ तुम चले गए !

भारतीय ग़ज़ल गायिकी को एक नए मुकाम पर ले जाने वाले जगजीत सिंह का 23 सितंबर, 2011 को निधन हो गया। वे 70 वर्ष के थे। कई भारतीय भाषाओं में अपने गायन के चलते मील का पत्थर साबित हो चुके जगजीत सिंह का जन्म 8 फरवरी 1941 में हुआ।

हिंदी फ़िल्म संगीत व ग़ज़ल की दुनिया में जगजीत सिंह का संघर्ष 1967 से शुरू हुआ जब वे मुंबई आए। आरंभ में उन्होंने विज्ञापनों के लिए जिगल्स गाए, कभी शादियों में गाने गाए तो कभी पार्टियों में अपनी कला को प्रदर्शित किया। किसी को क्या पता था कि फ़िल्मी दुनिया में प्लेबैक सिंगिंग का सपना लेकर आने वाले जगजीत सिंह एक दिन ग़ज़ल सम्राट बनेंगे।

विश्व हिंदी सचिवालय

अंतर्राष्ट्रीय हिंदी कविता प्रतियोगिता

पुरस्कार विजेता

प्रथम पुरस्कार	नीतू सिंह (रेणुका) हैदराबाद, भारत	750 डॉ
द्वितीय पुरस्कार	झमन वशिष्ठ कुमार बोन आकेय, मॉरीशस	500 डॉ
तृतीय पुरस्कार	डॉ कौषल किशोर श्रीवास्तव रलेन वेवली, ऑस्ट्रेलिया	250 डॉ

पाँच वर्षीया नन्ही ब्लॉगर अक्षिता (पाखी) वर्ष 2011 हेतु राष्ट्रीय बाल पुरस्कार (National Child Award) से सम्मानित



शेष पृ. 6

अक्टूबर में गैट विश्वविद्यालय, गैट, बेल्जियम के दर्शनशास्त्र विभाग में एक अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित हुई।



शेष पृ. 3

अब मैं सिर्फ हिंदी में ही बात करूंगा

अक्षय कुमार



शेष पृ. 8

भारतीय संगीत जगत में जगजीत सिंह और उनकी पत्नी चित्रा सिंह सफलता का विशालतम आयाम गढ़ने वाली भारत की प्रथम जोड़ी थी। भारत में वर्षों तक गायन का चेहरा बने रहे जगजीत सिंह के चाहने वाले पूरी दुनिया में फैले हुए हैं।

पद्मभूषण सम्मान, साहित्य अकादेमी सम्मान, दायावती मोदी सम्मान आदि से सम्मानित जगजीत सिंह ने लता मंगेशकर, गुलज़ार, जावेद अख्तर आदि विख्यात कलाकारों के सहयोग से एल्बम निकाले जो बहुत पसंद किए गए।

जगजीत सिंह के लगभग सभी गाने दिल को छू लेने वाले हैं। उनके *हाँ-हाँ से छू लो तुम, झुकी झुकी सी नज़र, शाम से आँख में नमी सी है, वो कागज़ की कश्ती वो बारिश का पानी, बड़ी नाजुक सी है मंज़िल* आदि गाने व गज़लें नोस्टाल्जिया व यादों से परिपूर्ण हैं।

उनके दुनिया से विदा होने के बाद हिंदी जगत में उनके जैसे महान ग़ज़ल गायक और संगीतकार की जो जगह रिक्त हुई है उसकी भरपाई करना संभव नहीं है।

नहीं रहे श्रीलाल शुक्ल

हिंदी के विख्यात साहित्यकार श्रीलाल शुक्ल का लखनऊ में निधन हो गया। वे नहीं रहे, पर राग दरबारी रहेगा। उनकी न रहने की सूचना एक आघात है, लेकिन उनका रचा हुआ एक विरासत। उन्हें साँस में तकलीफ़ की शिकायत के बाद लखनऊ के एक अस्पताल में भर्ती कराया गया था। हाल ही में उन्हें ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित किया गया था। श्रीलाल शुक्ल जी अपने व्यंग्य, कहानियों, उपन्यासों, बाल साहित्य आदि के लिए विख्यात हुए।

स्वतंत्रता के बाद के ग्रामीण जीवन की मूल्यहीनता को परत दर परत उघाड़ने वाले उपन्यास राग दरबारी पर एक दूरदर्शन-धारावाहिक का निर्माण भी हुआ है। जब उनकी उम्र 34 वर्ष की थी तो राग दरबारी उपन्यास ने उन्हें हिंदी साहित्य में अमर बना दिया। वह अकादेमी पुरस्कार पाने वाले हिंदी के सबसे कम उम्र के लेखक हैं।

अपने धारदार लेखन से हिंदी व्यंग्य को एक नई दिशा देने वाले श्रीलाल शुक्ल

ने 28 अक्टूबर, 2011 को लखनऊ में अपनी अंतिम साँस ली। उल्लेखनीय है कि कुछ समय पहले ही उन्हें ज्ञानपीठ से अलंकृत किया गया था। बीमारी के कारण उत्तर-प्रदेश के राज्यपाल श्री बी. एल. जोशी ने ज्ञानपीठ के पदाधिकारियों के साथ गोमती नगर स्थित एक निजी अस्पताल में जाकर उन्हें इस अलंकरण से सम्मानित किया था। इसके साथ ही श्रीलाल शुक्ल को साहित्य अकादेमी सम्मान तथा पद्म भूषण सम्मान से नवाज़ा गया है।

चले गए हज़ारिका

जाने-माने गायक और संगीतकार भूपेन हज़ारिका नहीं रहे। कई दिनों से गंभीर रूप से बीमार हज़ारिका ने शनिवार 5 नवंबर को मुंबई के कोकिलाबेन धीरुभाई अंबानी अस्पताल में अंतिम साँस ली। फ़िल्म *रुदाली* के गीतों से आम जन के बीच लोकप्रिय भूपेन दा 85 साल के थे। एक मामूली सर्जरी के बाद वे पिछले चार माह से वेंटिलेटर पर थे। शनिवार को शाम साढ़े चार बजे उन्होंने अंतिम साँस ली। निमोनिया होने के बाद 20 अक्टूबर को हालत अधिक बिगड़ जाने पर भूपेन दा को अस्पताल में भर्ती कराया गया था। अस्पताल में उनकी सहयोगी और फ़िल्म डायरेक्टर कल्पना लाजमी, उनके भतीजे और अन्य प्रशंसक मौजूद थे। भूपेन दा के पार्थिव शरीर को गुहाटी में अंतिम दर्शन के लिए दो दिनों तक रखे जाने के बाद अंत्येष्टी की गई।

1992 में दादा साहब फालके पुरस्कार और पद्म भूषण से नवाज़े जा चुके भूपेन दा एक ऐसे विलक्षण कलाकार थे जो अपने गीत खुद लिखते थे, संगीतबद्ध करते थे और गाते थे। उनका जन्म असम के सादिया में हुआ था। बचपन में ही उन्होंने अपना पहला गीत लिखा और दस साल की उम्र में उसे गाया। उन्होंने असमिया की दूसरी फ़िल्म *इंद्रमालती* के लिए 1939 में 12 साल की उम्र में काम किया था।

गाँधी टू हिटलर फ़िल्म में महात्मा गाँधी के भजन *वैष्णव जन* और फ़िल्म *रुदाली* के *दिल हम हम करे* के अलावा *गंगा बहती हो* *क्यों* को अपनी आवाज़ और संगीत देने वाले भूपेन दा को सांस्कृतिक दूतों में से एक माना जाता है। उन्होंने न केवल गीत लिखे बल्कि कविता लेखन, पत्रकारिता, गायन फ़िल्म-निर्माण आदि अनेक क्षेत्रों में काम किया। भूपेन दा के निधन से संगीत जगत और भारत देश के बाहर संगीत प्रेमियों में शोक की लहर छा गई है।

मॉरीशस में भारतीय आप्रवासियों के आगमन की 177 वीं जयंती



बुधवार 2 नवंबर, 2011 को मॉरीशस में गिरमिटिया मज़दूरों के आगमन की 177 वीं वर्षगांठ के अवसर पर आप्रवासी घाट ट्रस्ट फ़ंड तथा कला एवं संस्कृति मंत्रालय के संयुक्त तत्वावधान में एक भव्य समारोह का आयोजन किया गया। इस मौके पर मॉरीशस गणराज्य के राष्ट्रपति महामहिम सर अनिरुद्ध जगन्नाथ, माननीय प्रधान मंत्री डॉ. नवीनचंद्र रामगुलाम, ऊर्जा एवं सार्वजनिक उपयोग मंत्री डॉ. राशीद बीबीजोन, वित्त मंत्री ग़्ज़ाविये लिक जीवाल, मूल ढाँचा मंत्री अनिल कुमार बेचू, कला व संस्कृति मंत्री मुकेश्वर चुनी, भारतीय उच्चायुक्त महामहिम टी पी सीताराम तथा आप्रवासी घाट ट्रस्ट फ़ंड की अध्यक्ष डॉ. विजयालक्ष्मी तिलक सहित अन्य महानुभाव उपस्थित थे।

आप्रवासी घाट पर उपस्थित महानुभावों ने सम्मान स्वरूप पुष्प श्रद्धांजलि अर्पित करके कार्यक्रम का शुभारंभ किया। उसके पश्चात मॉरीशस का राष्ट्रगान हुआ और आप्रवासी घाट ट्रस्ट फ़ंड की अध्यक्ष ने अपना स्वागत भाषण दिया। उपस्थित महानुभावों ने भी अपने संदेश सुनाए।



माननीय प्रधान मंत्री डॉ. नवीन चंद्र रामगुलाम द्वारा *लोक कहानियाँ* पर एक डिजिटल बुक (ई-पुस्तक) का लोकार्पण हुआ जो भोजपुरी, अंग्रेज़ी, फ्रेंच, हक्का तथा क्रियोल भाषाओं में उपलब्ध है। पूर्व-प्राथमिक व प्राथमिक कक्षा के छात्रों के लिए यह लाभदायक साबित होगा क्योंकि इससे न सिर्फ भाषा के स्तर पर बच्चों को फ़ायदा होगा बल्कि वे अपनी संस्कृति और परंपरा को भी बेहतर रूप से जान पाएँगे। इस मौके पर हिंदी, भोजपुरी, अंग्रेज़ी, फ्रेंच तथा क्रियोल भाषाओं में छात्रों ने *रत्नाम* (मुक्तक गेय कविता) प्रस्तुत किए जिनमें मुख्य रूप से आप्रवासियों को श्रद्धांजलि अर्पित की गई।

29 अक्टूबर, 2011 को हिंदी भाषा और साहित्य के विकास से जुड़ी संस्था हिंदी संगठन (हिंदी स्पीकिंग यूनियन) तथा शेर्मे ग्रेनिये आर्य समाज के सहयोग से आप्रवासी दिवस का आयोजन किया गया। 1 नवंबर, 2011 को भारतीय प्रवासी और विश्व भोजपुरी संस्थान द्वारा गंगा तालाब में एक महायज्ञ तथा सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन भी किया गया। इसी दिन को वाले दे प्रेत में हरे कृष्ण प्रीचींग सेंटर द्वारा आप्रवासी दिवस समारोह का आयोजन किया गया। शनिवार 12 नवंबर, 2011 को सी.एल.ए.सी, कोतेज में *‘दिवाली और भारतीय आप्रवासियों का आगमन’* विषय पर एक व्याख्यान का आयोजन हुआ। रविवार 13 नवंबर, 2011 को बोन आकेय के स्वागत भवन में आप्रवासी दिवस का आयोजन किया गया।

आप्रवासी दिवस के संदर्भ में आप्रवासी घाट ट्रस्ट फ़ंड तथा इन सभी संस्थाओं के संयुक्त तत्वावधान में ही ऐसे सांस्कृतिक, शैक्षिक व धार्मिक कार्यक्रमों का आयोजन संभव हो पाया।

गेंट विश्वविद्यालय में हिंदी कविता और उपन्यास पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी



अक्तूबर में गेंट विश्वविद्यालय, गेंट, बेल्जियम के दर्शनशास्त्र विभाग में एक अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित हुई। इस संगोष्ठी के सूत्रधार थे गेंट विश्वविद्यालय के दर्शनशास्त्र विभाग में विजिटिंग प्रोफेसर रमेशचंद्र शर्मा ऋषिकल्प। इसी विभाग की प्रो. इवा डी. क्लार्क की प्रेरणा से संपन्न इस संगोष्ठी में 'नई कविता का सामाजिक परिप्रेक्ष्य' तथा 'हिंदी उपन्यासों में निहित भारतीयता' विषयों पर गहन विचार-विमर्श हुए।

हिंदी के प्रसिद्ध कवि-आलोचक अशोक वाजपेयी ने विवेच्य विषयों पर बीज भाषण दिया। उन्होंने कहा कि नई कविता हिंदी कविता में आई एक अर्थवान घटना थी जिसका बीजारोपण तारसप्तक के प्रकाशन से हुआ था। अज्ञेय के प्रयत्नों से अस्तित्व में आई नई कविता ने सामान्य जीवन को अपना विषय बनाया तथा कविता के पुराने प्रतिमानों को नकार दिया। आरंभिक सत्र के बाद पहले सत्र में मैथिली राव ने 'नई कविता के संदर्भ में व्यक्ति, समाज और साहित्य' पर अपना वक्तव्य दिया। उन्होंने नई कविता के विभिन्न पक्षों पर अपनी बात रखते हुए उसकी विशिष्टता को रेखांकित किया।

इसके बाद विशेष रूप से आमंत्रित भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद के अध्यक्ष डॉ. कर्ण सिंह का व्याख्यान हुआ। उनके व्याख्यान का विषय था — 'हिंदी की नाना छवियाँ'। उन्होंने कहा कि हिंदी भारत की राजभाषा होने के साथ-साथ देश की संपर्क भाषा और बड़ी रससिद्ध भाषा है जिससे कविता हमारी स्मृति में बैठ जाती है। उन्होंने गेंट में पहली बार हुए इस अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी पर अपनी प्रसन्नता व्यक्त करते हुए भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद की पीठ को कामिल बुल्के पीठ किये जाने की घोषणा की।

4 अक्तूबर को पहले सत्र में 'नई कविता के सामाजिक परिप्रेक्ष्य' विषय पर वक्तव्य हुए। आरंभ में रमेशचंद्र शर्मा ऋषिकल्प ने इसपर अपना वक्तव्य दिया। उन्होंने नई कविता की ऐतिहासिक भूमिका को निरूपित करते हुए अज्ञेय के प्रयत्नों को बड़े फलक पर देखा। नंदकिशोर आचार्य ने कहा कि यह आंदोलन भले ही परंपरा के प्रतिपक्ष में खड़ा दिखता हो, वह है नहीं; इसलिए नहीं है कि इसने परंपरा से पाए सत्व को कविता के संस्कार में लगाया और देश की जनता के सुख-दुख की खोज-खबर ली। ज्योतिष जोशी ने अपने वक्तव्य में नई कविता की आरंभिक स्थितियों से लेकर उसके महत्वपूर्ण कवियों की विशद चर्चा की। ब्रजेंद्र त्रिपाठी ने नई कविता के विभिन्न सौपानों की चर्चा करते हुए उसके वैशिष्ट्य को रेखांकित किया और कहा कि इस आंदोलन ने कविता को लोकजीवन से जोड़ उसे जनपक्षीय कविता बनाने का यत्न किया।

इसके बाद के सत्र में बॉन विश्वविद्यालय, जर्मनी से आई अनुराधा भल्ला ने लोकवाद के रूप में भारतीयता को मार्क्सवादी दृष्टिकोण से परखा। उनका वक्तव्य प्रसिद्ध आलोचक नामवर सिंह की आलोचना में निहित लोकवाद पर आधारित था। मृदुल जोशी ने स्वाधीनता प्राप्ति के बाद हिंदी कविता में व्यक्त भारतीय जीवन को कविताओं के माध्यम से दिखाने की चेष्टा की। अगले सत्र में सत्यकाम ने हिंदी उपन्यास की उत्पत्ति की स्थितियों की चर्चा करते हुए बाद के उपन्यासों को परखा और बताया कि हिंदी के उपन्यासों में विभिन्न रूपों में भारतीयता व्यक्त हो रही है। नंदकिशोर आचार्य ने गोदान की धनिया, त्यागपत्र की मृणाल तथा अपने-अपने अजनबी की सेल्मा के विवेचन से इस निष्कर्ष पर पहुंचने का यत्न किया कि इन तीनों ही उपन्यासों में यही तीन स्त्रियाँ नायक हैं जो अपने ढंग से सत्याग्रह करती हैं और भारतीय चेतना की संवाहक होकर नायकत्व ग्रहण करती हैं।

अगले सत्र में पेरिस से आई अन्ने कस्टेन ने मृदुला गर्ग के 'कठगुलाब' तथा कृष्ण बलदेव वैद के 'लीला' नामक उपन्यासों के माध्यम से हिंदी उपन्यासों में स्त्रियों के प्रति लिंग-भेद को दिखाने की कोशिश की। ज्यूरिख से आई रीटा क्राउने ने मृदुला गर्ग के उपन्यास 'चितकोबरा' में व्यक्त स्त्री-दशा के बहाने भारतीय स्त्रियों की समकालीन स्थितियों का जायजा लिया। मॉस्को से आई गुजेल स्टेअल्कोवा ने अज्ञेय और मृदुला गर्ग के उपन्यासों में चित्रित भारतीय अस्मिता के विविध रूपों की छानबीन की।

इसी दिन एक विशेष सत्र में 'वैश्विक परिदृश्य में हिंदी' विषय पर महात्मा गाँधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के कुलपति विभूति नारायण राय ने कहा कि हिंदी आज चीनी के बाद दुनिया की दूसरी बड़ी भाषा है। उसे इससे फर्क नहीं पड़ता कि देश की सरकार में उसकी स्थिति कैसी है। नई-नई तकनीक, ज्ञान-विज्ञान और विमर्श की भाषा के रूप में हिंदी तेज़ी से आगे बढ़ रही है। इसमें उन्होंने हिंदी सिनेमा के योगदान को सराहा।

5 अक्तूबर को तीसरे और अंतिम दिन के पहले सत्र में विनोद कुमार मंगलम ने 'नई कविता में भारतीयता' विषय पर अपनी बात रखी। क्राकोव से आई रेनाता चेकाल्स्का ने हिंदी के दो आधुनिक कवियों - अज्ञेय और अशोक वाजपेयी की कविताओं में भारतीयता का परीक्षण किया। लॉसाने की निकोला पोडजा ने 1950 में अज्ञेय की भारतीयता संबंधी अवधारणा पर विचार किया।



अगले सत्र में पोजनान से आई मोनिका ब्रोवर्जिक ने श्रीलाल शुक्ल के उपन्यास 'राग दरबारी' में भारत और भारतीयों की छवि देखने की चेष्टा की। वियेना से आई नेपाली मूल की अलका चुडाल ने राहुल सांकृत्यायन की विचारधारा के माध्यम से भारतीय राष्ट्रवाद के आगमन को परखा।

अंत में एक समापन सत्र हुआ जिसमें विमर्श की निष्पत्तियों पर व्यापक चर्चा हुई। देश-विदेश से आए वक्ताओं ने गेंट विश्वविद्यालय के दर्शनशास्त्र विभाग के प्रति, विशेषकर रमेशचंद्र शर्मा के प्रति आभार व्यक्त करते हुए यूरोप में ऐसा महत्वपूर्ण आयोजन संभव करने पर धन्यवाद ज्ञापित किया। वक्ताओं ने प्रो. इवा डी. क्लार्क के प्रति भी आभार व्यक्त किया जिन्होंने इस आयोजन में प्रेरणास्पद भूमिका निभाई।

प्रवासी दुनिया से साभार

‘भारत के हित में, भारत को एक शक्तिशाली राष्ट्र बनाने के हित में, ऐसा राष्ट्र बनाने के हित में जो अपनी आत्मा को पहचाने, जिसे आत्म विश्वास हो, जो संसार के साथ सहयोग कर सके, हमें हिंदी को अपनाना चाहिए।’

पं. जवाहरलाल नेहरू

इंदौर में राष्ट्रीय पुस्तक मेला एवं अंतर्राष्ट्रीय गोष्ठी



साइबर संस्कृति के इस युग में रोज़ नए तकनीकी उपकरण आ रहे हैं लेकिन तकनीकी क्रांति के इस दौर में भी पुस्तकों का महत्व बना रहेगा। तकनीक के क्षेत्र में चाहे कितनी भी प्रगति हो जाए, मनुष्य के जीवन में किताबों का महत्व और भूमिका कभी कम नहीं होगी।' ये बात भारत के संविधान विशेषज्ञ और लेखक श्री सुभाष कश्यप ने कही। नेशनल बुक ट्रस्ट और श्री मध्यभारत हिंदी साहित्य समिति द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित इस नौ दिवसीय राष्ट्रीय पुस्तक मेले ने लोगों को किताबों से जोड़ने में अहम भूमिका निभाई। कार्यक्रम की अध्यक्षता समिति के उपसभापति एवं पूर्व कुलपति डॉ. भरत छपरवाल ने की।

शुभारंभ समारोह में उपस्थित लेखक, कवि, साहित्यकार, विद्यार्थी एवं अन्य पुस्तक प्रेमियों को संबोधित करते हुए डॉ. भरत छपरवाल ने कहा कि नेशनल बुक ट्रस्ट और समिति द्वारा आयोजित इस पुस्तक मेले का इंदौर के पुस्तक प्रेमियों को वर्ष भर इंतज़ार रहता है। एन.बी.टी के संपादक श्री पंकज चतुर्वेदी ने बताया कि इस पुस्तक मेले में देश के सत्तर प्रख्यात प्रकाशकों ने विभिन्न विषयों पर प्रकाशित लाखों पुस्तकें प्रदर्शित की हैं। मेले में हिंदी के साथ-साथ गुजराती, मराठी, उर्दू और अंग्रेज़ी सहित कई भारतीय भाषाओं के नए प्रकाशन उपलब्ध हैं।

'विदेश में हिंदी' विषय पर अंतर्राष्ट्रीय गोष्ठी का आयोजन भी किया गया। समिति के शिवाजी भवन में आयोजित इस गोष्ठी में जापान की हिंदी विदुषी तोमोको किकुची, सूरीनाम के हिंदी विद्वान श्री भगवान, श्री मनोज श्रीवास्तव और श्री मधुकर पंवार ने भाग लिया। इस मौके पर हिंदी की तीन पुस्तकों का लोकार्पण किया गया। नेशनल बुक ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित 'सूरीनाम', 'हिरोशिमा का दर्द' और 'नागालैंड की लोककथा' का लोकार्पण तोमोको किकुची, श्री मधुकर पंवार और समिति के प्रधान श्री बसंत सिंह जौहरी ने किया।

सृजनगाथा तथा हिंदी होमपेज से साभार

लखनऊ में हुई अंतर्राष्ट्रीय हिंदी संगोष्ठी

'चीनी और अंग्रेज़ी के स्थान पर अब विश्व में हिंदी प्रथम स्थान पर प्रतिष्ठित हो गई है। दुनिया के लगभग ... देशों और सभी महाद्वीपों में हिंदी अभिव्यक्ति का माध्यम है। हिंदी की ताकत उसका बहुविध भाषिक स्वरूप है।' ये बात भारतीय हिंदी परिषद के अधिवेशन और अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी में उभरकर आई।

लखनऊ विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग द्वारा आयोजित इस दो दिवसीय संगोष्ठी का शुभारंभ दक्षिण कोरिया में हिंदी की प्राध्यापक वू. जो. किम, अरुणाचल प्रदेश के पूर्व राज्यपाल श्री माताप्रसाद और ललित के कुलपति प्रो. मनोज कुमार मिश्र की उपस्थिति में हुआ। नई सदी में हिंदी का वैश्विक परिदृश्य विषय पर हुई इस संगोष्ठी में भारत के 24 हिंदी विद्वानों का सम्मान भी किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि अरुणाचल प्रदेश के पूर्व राज्यपाल श्री माताप्रसाद थे। उन्होंने कहा कि हिंदी में स्वीकार्यता का गुण है जो उसकी सबसे विशेषता है। भारतीय हिंदी परिषद के अध्यक्ष डॉ. त्रिभुवन नाथ शुक्ल ने हिंदी की वैश्विक स्थिति पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि हिंदी अब विश्व में प्रथम स्थान ले चुकी है। कुलपति प्रो. मनोज कुमार मिश्र ने कहा कि हमें हिंदी को न्यायालय की भाषा बनाना चाहिए। उन्होंने इसके लिए हिब्रू भाषा का उदाहरण भी दिया। दक्षिण कोरिया में हिंदी की प्राध्यापक वू जो किम ने हिंदी की दशा एवं दिशा का उल्लेख किया। धाराप्रवाह हिंदी में बोलते हुए उन्होंने हिंदी की सर्जनात्मक गतिविधियों एवं अनुवाद के माध्यम से हिंदी की वैश्विक विशेषताओं पर भी ज़ोर दिया।

इस अवसर पर डॉ. रमेश चन्द्र त्रिपाठी द्वारा संपादित स्मृति-उपायान, डॉ. बलजीत श्रीवास्तव द्वारा संपादित- शोध सृजन पत्रिका और डॉ. उषा गुप्त द्वारा लिखित- अमेरिका में हिंदी पुस्तक का विमोचन किया गया। आरंभ में अतिथियों का स्वागत प्रो. केडी सिंह ने किया। उन्होंने विभाग की उपलब्धियों को रेखांकित किया।

आयोजन के दूसरे दिन अलग-अलग विषयों पर केंद्रित 9 समानांतर गोष्ठियाँ हुईं। इनमें देश भर से आए हिंदी प्राध्यापकों ने भाग लिया। संगोष्ठी के समापन समारोह में उत्तर प्रदेश के संस्कृति मंत्री सुभाष पाण्डे भी उपस्थित थे।

प्रो केडी सिंह

वाशिंगटन में बसा एक भारतीय युवा नेट के माध्यम से सैकड़ों विदेशियों को सिखा रहा है हिंदी।

उच्च शिक्षा पाने के बाद जो युवा हिंदी बोलना पसंद नहीं करते उनके लिए अमेरिका की राजधानी वाशिंगटन में रहने वाले युवा सॉफ्टवेयर इंजीनियर अशुतोष अग्रवाल एक मिसाल हैं। सात समुंदर पार रहकर अशुतोष इंटरनेट के माध्यम से सैकड़ों विदेशियों को और अनिवासी भारतीयों की अगली पीढ़ी को हिंदी सिखा रहे हैं और वो भी बिना किसी अपेक्षा के। वे सूचना तकनीक को हिंदी से जोड़कर उसका उपयोग हिंदी को बढ़ावा देने में कर रहे हैं।

ये प्रतिभाशाली युवा वाशिंगटन में रहकर इंटरनेट के माध्यम से सैकड़ों अहिंदी भाषी और हिंदी भाषियों को हिंदी सिखा रहे हैं। अशुतोष की हिंदी की कक्षाएँ इंटरनेट पर लगती हैं। उन्होंने हिंदी सिखाने के लिए चालीस से भी ज़्यादा वीडियो बनाकर यू-ट्यूब पर डाल दिए हैं। हिंदी युनिवर्सिटी नाम के उनके इस यू-ट्यूब चैनल पर फिलहाल पूरे विश्व से हज़ारों से भी अधिक लोग हिंदी सीख रहे हैं। वे हिंदी प्रेमियों के आग्रह पर पूर्व निर्धारित समय पर हिंदी सिखाने के लिए निःशुल्क वेबिनार भी आयोजित करते हैं।

अशुतोष जैसे हिंदी सेवी बिना किसी अपेक्षा के हिंदी को बढ़ावा देने में जुटे हुए हैं; तो कृपया उनके इस यू-ट्यूब चैनल पर जाकर उनका हौसला बढ़ाइए ताकि वो और अधिक ऊर्जा के साथ हिंदी के विस्तार को एक नई दिशा दे सकें।

कोपनहेगन में हिंदी सांस्कृतिक संगोष्ठी



9 अक्टूबर 2011 को कोपनहेगन में सांस्कृतिक कैफ़े ट्रंकबार हिंदी संगोष्ठी से एक बार फिर गूँज ! इस कार्यक्रम की नींव तब पड़ गई थी जब मई 2011 में अभिव्यक्ति-अनुभूति की संपादक पूर्णिमा वर्मन कोपनहेगन आई थीं और उनकी प्रेरणा से डेनमार्क में ऐसा पहला साहित्यिक कार्यक्रम संपन्न हुआ था। पूर्णिमा वर्मन ने कोपनहेगन निवासी भारतीयों को प्रेरित किया था कि वे इसी तरह नियमित रूप से मिलते रहें और अपनी हिंदी भाषा व भारतीय संस्कृति को बढ़ावा देते रहें। इस द्वितीय हिंदी संगोष्ठी में डेनमार्क के कई भारतीयों ने अपनी भागीदारी दी। सुखदेव संयोग से इस बार डॉ. विजया सती उपस्थित थीं। डॉ. सती दिल्ली विश्वविद्यालय में हिंदी की प्रोफ़ेसर हैं और आजकल एल्टे विश्वविद्यालय बुदापेष्ट, हंगरी, में भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद की ओर से नियुक्त हिंदी की विज़िटिंग प्रोफ़ेसर हैं। डॉ. सती की उपस्थिति से कार्यक्रम और अधिक प्रभावी हो गया।

हम सभी जानते हैं कि हिंदी एक बृहत देश हिंदुस्तान की राजभाषा और एक विशाल जनसंख्या की मातृभाषा है। दुनिया में हिंदी बोलने वालों की संख्या पहले से तीसरे स्थान पर निश्चित की जाती रही है। विश्व में किसी देश की भाषा की माँग उसकी राष्ट्रीय शक्ति को चित्रित करती है। इसे देखते हुए पिछले कुछ वर्षों में हिंदी की स्थिति में तेज़ी से विकास हुआ है। विशेषकर विदेशों में रहने वाले भारतीय हिंदी व भारतीय संस्कृति के विकास को लेकर काफ़ी सक्रिय होते जा रहे हैं। आज विदेशों से काफ़ी अच्छे हिंदी साहित्य लिखा जा रहा है। हिंदी पत्र-पत्रिकाएँ प्रकाशित हो रही हैं। विश्व के अनेकों विश्वविद्यालयों में हिंदी के पाठ्यक्रम शुरू हो गए हैं। हिंदी एक भाषा ही नहीं, हमारी संस्कृति व परंपराओं की अभिव्यक्ति भी है। सो देश-विदेश में चलते सामाजिक, सांस्कृतिक व धार्मिक क्रियाकलापों एवं गतिविधियाँ भी बढ़ी हैं।

कोपनहेगन में आयोजित संगोष्ठी का विषय था- कोपनहेगन निवासी भारतीय हिंदी को कितना आवश्यक समझते हैं ? अपने जीवन में कितना वे हिंदी को अपनाते हैं ? कितनी वे हिंदी पत्रिकाएँ पढ़ते हैं ? अपने बच्चों को हिंदी सीखने के लिए वे कितना प्रेरित करते हैं। इस कार्यक्रम में कोपनहेगन में भारतीय सांस्कृतिक संस्थाओं के प्रतिनिधि भी उपस्थित थे। उन्होंने प्रकाश डाला कि अपनी संस्थाओं द्वारा आयोजित कार्यक्रमों द्वारा कैसे वे हिंदी व भारतीय संस्कृति को प्रोत्साहित करते हैं। डॉ. रश्मि सिंगला, सुखदेव सिंह सन्धू, डॉ. सुरेश बिहारी माथुर, सुनीता मंगा, डॉ. सुभाष धर, गुरुचरण मिंगलानी, डॉ. सुधीर शर्मा, स्वाति इंगवाल, सतीश सरीन आदि कई बुद्धिजीवियों ने अपने विचार प्रस्तुत किये। अंत में विजया जी ने एलते विश्वविद्यालय में विदेशियों को हिंदी व भारतीय संस्कृति को पढ़ाने के अपने रोचक व जानकारीपूर्ण अनुभव सुनाए। कार्य का समापन गज़ल व कविता पाठ से हुआ।

अर्चना पैन्थली

श्री लंका में हिंदी दिवस समारोह



नवल वसंत की प्रस्तुति

पिछले 14 सितंबर को हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में श्री लंका के कॉलम्बू स्थित भारतीय सांस्कृतिक केंद्र में सान्ध्य गीत संज्ञक एक विशेष कार्यक्रम संपन्न हुआ। कॅलणिय विश्वविद्यालय के हिंदी अध्ययन विभाग एवं हिंदी परिषद द्वारा प्रस्तुत इस कार्यक्रम में 30 से अधिक हिंदी के छात्र-छात्राओं ने भाग लिया। हिंदी साहित्य के आदिकाल से लेकर आधुनिक काल तक के साहित्यकारों के चुनिंदा गेय पदों का संगीत संयोजन किया गया और उन्हें इस कार्यक्रम में प्रस्तुत किया गया। साथ-साथ हिंदी लोक नाटकों, जैसे नौटंकी दहीवाली एवं विदेसिया के दो गीत भी इसमें सम्मिलित थे। इसका आयोजन हिंदी अध्ययन विभाग, हिंदी परिषद, कॅलणिय विश्वविद्यालय, भारतीय सांस्कृतिक केंद्र, कॉलम्बू, भारतीय उच्चायोग, कॉलम्बू, भारतीय सांस्कृतिक परिषद, नई दिल्ली के सहयोग से किया गया।



वर दे वीणा वादिनी की प्रस्तुति

प्रो. उपुल रंजित हेवावितानगमगे, अध्यक्ष,
हिंदी अध्ययन विभाग, कॅलणिय विश्वविद्यालय, श्री लंका

ऑस्ट्रेलिया में हिंदी अनुवाद को राष्ट्रीय सम्मान



सिडनी की लेखिका और कवियित्री रेखा राजवंशी को एबोरीजनल्स की ड्रीम टाइम एनिमेशन फ़िल्म के हिंदी अनुवाद के लिए राष्ट्रीय स्तर का रनर-अप अवार्ड मिला।

यह अवार्ड ऑस्ट्रेलिया की अनुवाद और दुभाषिया सेवा संस्था AUSIT (ऑस्ट्रेलियन

इंस्टिट्यूट ऑफ़ इंटरप्रेटर्स एंड ट्रांसलेटर्स) ने राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित किया था और इसमें नामांकन की घोषणा मार्च में की गई थी। ऑस्ट्रेलिया भी भारत की विविधता का देश है और यहाँ दुनिया भर की भाषाएँ बोली जाती हैं, तो यह नामांकन सभी भाषाओं के अनुवादकों और दुभाषियों के लिए खुला हुआ था। निर्णायक मंडल में भाषा विशेषज्ञों का एक दल चुना जाता है जो अनुवाद की गुणवत्ता के साथ साथ यह भी देखता है कि नामांकित प्रोजेक्ट का विषय कितना महत्वपूर्ण है।

ऑस्ट्रेलिया के प्रथम निवासी एबोरीजनल्स ही थे। बाद में यहाँ अंग्रेज़ आए और इसे ब्रिटेन का एक हिस्सा बना लिया गया। परंतु अब यहाँ आदिवासियों को पूरा सम्मान दिया जाता है और उनकी संस्कृति, सभ्यता, मूल्यों, विश्वासों, कला और साहित्य को ज़िंदा रखने के लिए ऑस्ट्रेलियाई सरकार प्रयासरत है। ड्रीम टाइम कहानियों में वो कहानियाँ निहित हैं जो आदिवासियों की अनेक पीढ़ियों में मौखिक रूप से हस्तांतरित होती रही हैं।

पिछले वर्ष रेखा राजवंशी ने 12 ड्रीमिंग कहानियों का अनुवाद किया था। इनमें से एक लोकप्रिय कहानी 'तस्मानिया का टाइगर' का अनुवाद निर्णय के लिए भेजा गया था। निर्णायक मंडल ने उसे काफ़ी उच्च स्तर का अनुवाद माना और इस प्रोजेक्ट को महत्वपूर्ण माना क्योंकि ये अनुवाद ऑस्ट्रेलिया के प्रथम वंशजों की जातक कथाओं को न सिर्फ भारत के हिंदी वासियों बल्कि दुनिया भर के हिंदी प्रेमियों तक पहुँचाएगा।

अवार्ड उत्सव ऑस्ट्रेलिया की राजधानी कैनबरा की ऑस्ट्रेलियन नेशनल युनिवर्सिटी के भवन में आयोजित किया गया था। हिंदी अनुवाद को मिलने वाले इस अवार्ड ने हिंदी प्रेमियों को न सिर्फ गौरवान्वित किया है बल्कि ऑस्ट्रेलिया में हिंदी की स्थिति को मज़बूत भी बनाया है।

सिडनी से रेखा राजवंशी की रिपोर्ट

प्रधान संपादक

श्रीमती पूनम जुनेजा

संपादक

श्री गंगाधरसिंह सुखलाल

संपादन सहयोग

श्री जिष्णु होरिशरण, सुश्री श्रद्धांजलि हजगैबी

सुश्री प्रीति सियांबर, श्रीमती विजया सरजु

विश्व हिंदी सचिवालय

स्विफ्ट लेन, फॉरेस्ट साइड, मॉरीशस

World Hindi Secretariat

Swift Lane, Forest Side, Mauritius

Phone (230) 676 1196

Fax (230) 676 1224

Email : whsmauritius@gmail.com /

whsmauritius@intnet.mu

Printed by

BAHADOOR PRINTING LTD.

Avenue St. Vincent de Paul - Pailles

Tel: 208 1317

नन्हीं ब्लॉगर अक्षिता (पाखी) को राष्ट्रीय बाल पुरस्कार



प्रतिभा उम्र की मोहताज नहीं होती। आज के आधुनिक दौर में बच्चों का सृजनात्मक दायरा बढ़ रहा है। वे न सिर्फ देश के भविष्य हैं, बल्कि हमारे देश के विकास और समृद्धि के संवाहक भी। जीवन के हर क्षेत्र में वे अपनी प्रतिभा का डंका बजा रहे हैं। बेटों के साथ-साथ बेटियाँ भी जीवन कई हर ऊँचाइयों को छू रही हैं। तभी तो मात्र 4 साल 8 माह की आयु वाली नन्हीं ब्लॉगर अक्षिता (पाखी) को वर्ष 2011 हेतु राष्ट्रीय बाल पुरस्कार (National Child Award) के लिए चयनित किया गया है। संप्रति अंडमान-निकोबार द्वीप समूह में भारतीय डाक सेवा निदेशक और चर्चित लेखक, साहित्यकार व ब्लॉगर कृष्ण कुमार यादव एवं लेखिका व ब्लॉगर आकांक्षा यादव की सुपुत्री अक्षिता को यह पुरस्कार 'कला और ब्लॉगिंग' (Excellence in the field of Art and Bloggong) के क्षेत्र में शानदार उपलब्धि के लिए बाल दिवस, 14 नवंबर 2011 को विज्ञान भवन, नई दिल्ली में आयोजित एक कार्यक्रम में भारत सरकार की महिला एवं बाल विकास मंत्री श्रीमती कृष्णा तीर्थ जी द्वारा प्रदान किया गया।



विभिन्न राज्यों से चयनित कुल 27 बच्चों को ये पुरस्कार दिए गए, जिनमें मात्र 4 साल 8 माह की आयु में सबसे कम उम्र में पुरस्कार प्राप्त कर अक्षिता (पाखी) ने एक कीर्तिमान स्थापित किया। ड्राइंग, संगीत, यात्रा इत्यादि से संबंधित उनकी गतिविधियाँ उनकी ब्लॉग पाखी की दुनिया (www.pakhi-akshita.blogspot.com/) पर उपलब्ध है जो 24 जून, 2009 को आरंभ हुआ था। इस पर उन्हें अकल्पनीय प्रतिक्रियाएँ प्राप्त हुईं। 175 से अधिक ब्लॉगर इससे जुड़े हैं। उनके

ब्लॉग 70 देशों के 27,000 से अधिक लोगों द्वारा देखे गए हैं। अक्षिता ने नई दिल्ली में अप्रैल 2011 में हुए अंतर्राष्ट्रीय ब्लॉगर सम्मेलन में 2010 का हिंदी साहित्य निकेतन परिकल्पना का सर्वोत्कृष्ट पुरस्कार भी जीता है। इतनी कम उम्र में अक्षिता के एक कलाकार एवं ब्लॉगर के रूप में असाधारण प्रदर्शन ने उन्हें उत्कृष्ट उपलब्धि हेतु राष्ट्रीय बाल पुरस्कार, 2011 दिलाया।

नन्हीं ब्लॉगर अक्षिता (पाखी) को इस गौरवमयी उपलब्धि पर अनेकोंनेक शुभकामनाएँ और बधाइयाँ।

दुर्ग विजय सिंह दीप एवं आकांक्षा की रपट

डॉ. रविकांत दुबे और मॉरीशस में भोजपुरी



डॉ. रविकांत दुबे की मॉरीशस यात्रा एक ऐसे समय में हुई जब भोजपुरी के विकास में यहाँ पर ऐतिहासिक कदम उठाए जा रहे हैं। भोजपुरी भाषा और संस्कृति के महत्व को पहचानते हुए वर्तमान सरकार अगले साल से प्राथमिक शिक्षा व्यवस्था के पाठ्यक्रम में भोजपुरी पठन-पाठन आरंभ करने जा रही है। इस ऐतिहासिक मोड़ पर भोजपुरी को लेकर भारत, विशेषकर बिहार सरकार और मॉरीशस के बीच आदान-प्रदान महत्वपूर्ण हो गया है।

प्रो. रविकांत दुबे बिहार राज्य सरकार द्वारा स्थापित भोजपुरी अकाडेमी के अध्यक्ष के पद पर कार्यरत हैं। मॉरीशस भोजपुरी संस्थान के निमंत्रण पर प्रो. रविकांत दुबे मॉरीशस आए हुए थे। महात्मा गांधी संस्थान के भोजपुरी, लोक संस्कृति विभाग के सहयोग से गुरुवार 24 नवंबर को महात्मा गांधी संस्थान के सुब्रमन्यम भारती सभागार में उनका व्याख्यान चला। कार्यक्रम की शुरुआत में महात्मा गांधी संस्थान के कार्यकारिणी निदेशक, श्री लेकराज मंगर ने प्रो. दुबे जी का स्वागत करते हुए, महात्मा गांधी संस्थान के भोजपुरी विभाग के कार्यों व भावी योजनाओं की चर्चा की। इसके पश्चात् महात्मा गांधी संस्थान व रविंद्रनाथ टैगोर संस्थान के परिषद के अध्यक्ष श्री रविन्द्र द्वारका ने भोजपुरी के ऐतिहासिक महत्व पर प्रकाश डाला और बिहार के भोजपुरी अकाडेमी और महात्मा गांधी संस्थान के बीच आदान-प्रदान/ आपसी सहयोग को कार्यरूप देने की माँग की। इस दिशा में महात्मा गांधी संस्थान तथा रविंद्रनाथ टैगोर संस्थान के कलाकार और शोधकर्ता बिहार भोजपुरी अकाडेमी द्वारा दी जा रही सुविधाओं का लाभ उठा पाएँगे और भारत के भोजपुरी लोक कलाकार मॉरीशस में आकर अपनी अविरल-अद्वितीय संस्कृति से स्थानीय जन-मानस में विराजमान लोक-संस्कृति को बढ़ावा दे सकेंगे।

मॉरीशस के कला एवं संस्कृति मंत्री, श्री मुकेश्वर चुनी ने अपनी ओर से बहुत काव्यात्मक और हृदयस्पर्शी ढंग से भोजपुरी के महत्व को उजागर किया। उन्होंने इस बात पर ज़ोर दिया कि भारत के बाहर अगर ऐसा कोई देश है जहाँ पर भोजपुरी भाषा और संस्कृति का विकास हो रहा है और सरकार भी इसमें पूरा सहयोग दे रही है तो वह मॉरीशस ही है। मंत्री मुकेश्वर चुनी ने युवा पीढ़ी से माँग की कि वे अपनी संस्कृति, अपने धरोहर को बचाये रखें। महात्मा गांधी का हवाला देते हुए उन्होंने कहा कि हमें अन्य संस्कृतियों का आदर-सम्मान करना चाहिए परंतु उनके अत्यधिक दबाव और प्रभाव में हमारी अपनी संस्कृति की नींव अपने हाथ से न निकलने दिया जाए। कला एवं संस्कृति मंत्री ने घोषणा की कि उनके मंत्रालय की ओर से शीघ्र ही भोजपुरी स्पीकींग यूनिनन स्थापित की जाएगी।

शिक्षा एवं मानव संसाधन मंत्री डॉ. वसंत कुमार बनवारी का पूरा वक्तव्य भोजपुरी में रहा। उन्होंने इस बात पर संतुष्टि और खुशी व्यक्त की कि सरकारी परियोजना के अनुसार अगले साल से हमारे प्राथमिक विद्यालयों में भोजपुरी की पढ़ाई शुरू हो रही है। उन्होंने इच्छा व्यक्त की कि आगे चलकर भोजपुरी का पठन-पाठन माध्यमिक विद्यालयों में भी हो और इस दिशा में उनके मंत्रालय की ओर से कार्य शुरू हो गया है। महात्मा गांधी संस्थान के तत्वावधान में एक उच्च स्तरीय समिति इस पर काम कर रही है। डॉ. वसंत कुमार बनवारी ने बिहार भोजपुरी अकाडेमी के अध्यक्ष प्रो. रविकांत दुबे से माँग

की कि आगे चलकर मॉरीशस के संस्थानों और बिहार के विश्वविद्यालयों तथा भोजपुरी के लिए कार्यरत अन्य संस्थानों के बीच आपसी लेन-देन बढ़ाया जाए।

मॉरीशस भोजपुरी अकाडेमी की निर्देशिका, डॉ. सरीता बूधू ने प्रो. दुबे पर विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने भी मॉरीशस में भोजपुरी के विकास और उत्थान के लिए बिहार भोजपुरी अकाडेमी के साथ संबंधों को सशक्त बनाने के महत्त्व पर बात की।

बक्सर, बिहार से आए, बिहार के भोजपुरी अकाडेमी के अध्यक्ष, भोजपुरी-भाषी, प्रो. रविकांत दुबे राजनीति शास्त्र के विशेषज्ञ व अकाडेमिक होते हुए भी साहित्य, लोक-कला व लोक-संस्कृति के मर्मज्ञ अध्येता व प्रचारक भी हैं। अपने प्रभावयुक्त वक्तव्य में उन्होंने प्रांतीय, राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय मंच पर भोजपुरी के समग्र वांगमय की गरिमा स्थापित की। प्रचुर मात्रा में भोजपुरी साहित्य-सृजन व दिन-प्रतिदिन बढ़ते भोजपुरी चलचित्रों से, अब इस भाषा को हीन दृष्टि से न देखा जाए ऐसी संकल्पपूर्ण घोषणा रही प्रो. दुबे की।

भोजपुरी के शैक्षणिक व व्यावसायिक परिदृश्य में निःसंदेह विस्तार तो हो ही रहा है, साथ ही आमदनी की दृष्टि से भोजपुरी-संसार के अनेक स्रोत खुलते जा रहे हैं। साथ ही उन्होंने यह जानकारी भी दी कि अनेक विश्वविद्यालयों व संस्थाओं में भोजपुरी की शिक्षा व्यावसायिक रूप से प्रदान की जा रही है। इसके अतिरिक्त भोजपुरी में साहित्यिक, कलात्मक पत्रिकाओं के साथ-साथ भोजपुरी मीडिया भी दिन-ब-दिन ज़ोर पकड़ता जा रहा है।

भोजपुरी अकाडेमी द्वारा प्रकाशित ग्रंथों को स्थानीय तौर पर उपलब्ध कराए जाने के संकल्प के साथ प्रो. दुबे ने अपनी अकाडेमी की ओर से यहाँ की संस्थाओं व सरकार को इस भाषा, साहित्य, कला आदि को गौरवपूर्ण ढंग से प्रसारित कराने के पूर्ण सहयोग देने की इच्छा ज़ाहिर की। यह तभी संभव हो पाएगा जब दोनों ओर से एक प्रगाढ़ मैत्री संबंध की स्थापना हो पाए।

अरविन्द बिसैसर की रिपोर्ट

अमेरिका में हिंदी के लिए प्रयासरत है युवा हिंदी प्रेमी एडलर

‘हम अंग्रेज़ी भाषी हैं और कभी-कभार हिंदी में बोलते हैं मगर अब हम हिंदी भाषी होकर कभी-कभार अंग्रेज़ी बोलने वाले बनना चाहते हैं।’ हिंदी के प्रति दीवानगी की हद तक जाकर कही गई ये बात किसी भारतीय ने नहीं बल्कि एक ठेठ अमेरिकन ने कही है। हिंदी के प्रति समर्पित इस अमेरिकी युवा का नाम जूलियन एडलर है। अपने हिंदी प्रेम के कारण जूलियन अपने दोस्तों के बीच ‘हिंदी प्रेमी’ के नाम से जाने जाते हैं।

अमेरिका के मॉंटाना विश्वविद्यालय में राजनीति विज्ञान के विद्यार्थी जूलियन ने अपने विश्वविद्यालय में हिंदी सीखने के इच्छुक विद्यार्थियों का एक समूह बना लिया है। इस समूह में फ़िलहाल एडलर सहित कुल सात विद्यार्थी हैं। उसे यकीन है कि जल्दी ही इस समूह में इतने विद्यार्थी हो जाएंगे कि अगले सत्र से इसे विश्वविद्यालय के छात्र समूहों में जोड़ लिया जाए। एडलर को ये भी उम्मीद है कि निकट भविष्य में यहाँ दूसरी कुछ विदेशी भाषाओं की तरह हिंदी की कक्षाएँ भी शुरू हो सकेंगी। ये तो भविष्य की बात है मगर वर्तमान में विश्वविद्यालय में अरबी के प्राध्यापक समीर बितार ने इन लोगों को हिंदी पढ़ाने के लिए एक हिंदी शिक्षक की व्यवस्था कर दी है।

एडलर का हिंदी के प्रति लगाव मॉंटाना विश्वविद्यालय में भी चर्चा का विषय बन गया है। विश्वविद्यालय के ऑनलाइन न्यूज़ पेपर ने एडलर के हिंदी समूह की कहानी अपने मुख्य संस्करण में प्रकाशित कर इसकी सराहना की है। पूरे विश्व में हिंदी के प्रति लोगों की रुचि भी बढ़ रही है और हिंदी के प्रति सम्मान भी। अब ज़रूरत इस बात की है कि हिंदी भाषी लोगों के मन में भी अपनी भाषा के प्रति सम्मान का भाव जगे। जिस दिन हिंदी भाषी समाज अपनी मातृभाषा को यथोचित सम्मान देने लगेगा उस दिन से हिंदी विश्वभाषा के रूप में स्थापित हो जाएगी।

हिंदी होमपेज से साभार

पूर्वोत्तर नागरी लिपि राष्ट्रीय संगोष्ठी संपन्न

24-25 सितंबर को पूर्वोत्तर नागरी लिपि राष्ट्रीय संगोष्ठी तथा 34 वाँ अखिल भारतीय नागरी लिपि सम्मेलन अरुणाचल प्रदेश की राजधानी ईटानगर में संपन्न हुआ। स्थानीय देरानातुंग शासकीय महाविद्यालय में द्विदिवसीय संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र में उच्च शिक्षा निदेशक डॉ. जोरांग बाईगी, राजीव गांधी विश्वविद्यालय के उपकुलपति डॉ. मिदान, नागरी लिपि परिषद, दिल्ली के अध्यक्ष श्री सी. वी. चारी तथा महासचिव डॉ. परमानंद पांचाल ने देवनागरी को विश्व की सर्वश्रेष्ठ एवं वैज्ञानिक लिपि बताते हुए सभी से अपनी लिपि के साथ-साथ एक अतिरिक्त लिपि के रूप में देवनागरी अपनाने की ज़रूरत पर बल दिया।

डॉ. पांचाल ने आचार्य विनोबा भावे द्वारा स्थापित नागरी लिपि परिषद के उद्देश्यों की चर्चा करते हुए लिपि बोलियों के लिए देवनागरी को श्रेष्ठ विकल्प बताया। हिंदी में बोलते हुए डॉ. जोरांग



बाईगी ने जहाँ अनेक सुझाव दिए वहीं देवनागरी को राष्ट्रीय एकता के लिए आवश्यक बताया। उन्होंने कहा कि अरुणाचल प्रदेश में अनेक बोलियाँ हैं किंतु वहाँ की संपर्क भाषा हिंदी है। इससे पहले देरानातुंग कॉलेज के प्रधानाचार्य ने दिल्ली तथा भारत के विभिन्न भागों से आए विद्वानों का स्वागत करते हुए अरुणाचल की समस्त हिंदी प्रेमी जनता की ओर से शुभकामनाएँ व्यक्त की। इसी सत्र में 2011 का प्रतिष्ठित विनोबा नागरी सम्मान निशी जनजाति की विदुषी एवं सहायक आचार्य डॉ. जोरम अनिया ताना को प्रदान किया गया। पुरस्कार में पुष्पगुच्छ, स्मृतिचिह्न, प्रशस्तिपत्र, शाल तथा आठ हज़ार की नकद राशि संस्था के अध्यक्ष श्री सी वी चारी के कर कमलों से डॉ. ताना को जनजाति साहित्य के देवनागरीकरण के लिए भेंट की गई। कार्यक्रम संचालन डॉ. तुंबम रिवा जोमो ने किया। इस सम्मेलन के पाँच सत्रों में पूर्वोत्तर की बोलियों के लिए देवनागरी का प्रयोग, भारतीय भाषाओं के लिए संपर्क लिपि देवनागरी, अरुणाचल प्रदेश की बोलियाँ और नागरीलिपि, सूचना प्रौद्योगिकी और नागरी लिपि तथा पूर्वोत्तर भारत के साहित्य का नागरी लिपि में प्रकाशन (नेशनल बुक ट्रस्ट के सौजन्य से) पर विस्तृत चर्चा के दौरान अनेक भाषाविदों ने विभिन्न पक्षों को प्रस्तुत कर देवनागरी के अधिकाधिक प्रयोग पर बल दिया। चर्चा में भाग लेने वाले जहाँ पूर्वोत्तर के नागरी प्रेमी विद्वानों ने कुछ ध्वनियों के लिए अतिरिक्त चिह्नों की ज़रूरत बताई, वहीं अनेक छात्रों ने अपने शोधपत्र और आलेख प्रस्तुत कर संगोष्ठी की अभूतपूर्व सफलता और सार्थक संवाद को प्रमाणिकता प्रदान की।

विभिन्न सत्रों की अध्यक्षता साहित्य अकादमी दिल्ली के उपसचिव डॉ. बिजेंद्र त्रिपाठी, नेशनल बुक ट्रस्ट के डॉ. ललित मंडोरा, दिल्ली से प्रकाशित होने वाले राष्ट्रकिकर के संपादक डॉ. विनोद बब्बर, भारत सरकार में निदेशक रहे प्रो. सोमदत्त दीक्षित, हिंदी संस्थान के डॉ. उमाकांत खुबालकर ने की वहीं डॉ. श्री भगवान शर्मा, श्री नाहर सिंह वर्मा, डॉ. तारो सिन्दिक, डॉ. वीरेन्द्र परमार, डॉ. राजेन्द्र नाथ महरोत्रा, डॉ. विनोद मिश्र, डॉ. अशोक पाण्डेय ने चर्चा में हस्तक्षेप कर संगोष्ठी के विषय स्पष्ट करने तथा चर्चा को आयाम प्रदान करने में उल्लेखनीय योगदान किया। प्रथम दिवस देर रात तक चले कवि सम्मेलन 32 कवियों ने अपनी श्रेष्ठ रचनाएँ प्रस्तुत कीं। डॉ. बृजपाल सिंह संत द्वारा संचालित कवि-गोष्ठी में आधे से अधिक स्थानीय कवियों की सहभागिता और उनका उत्साह देखते ही बनता था। इस कवि गोष्ठी को टी वी चैनलों ने प्रसारित करके स ' द ' श ' A ' ज ' न - ज ' न ' त ' क ' प ' हु ' च ' आ ' य ' । ' समापन सत्र में कॉलेज की छात्राओं द्वारा प्रस्तुत जन जातीय नृत्य ने समा बाँध दिया। अंत में संस्था के महामंत्री डॉ. परमानंद पांचाल ने सभी को आभार व्यक्त करते हुए नागरी लिपि परिषद की ओर से ऐसे और आयोजनों की जानकारी भी दी। उन्होंने अरुणाचल प्रदेश के लोगों की सद्भावना तथा उनके आतिथ्य की भूरि-भूरि प्रशंसा करते हुए ईटानगर में अपनी स्थायी शाखा खोलने की घोषणा भी की।

दिल्ली से संगोष्ठी में भाग लेने वालों में पंचवटी लोकसेवा समिति, दिल्ली के संरक्षक डॉ. अम्बरीश कुमार, यथासंभव के दीपक गोयल, आचार्य ओमप्रकाश, श्री राजकुमार पाराशर, रमेश कुमार भी शामिल थे। सम्मेलन संचालिका डॉ. जोरम अनिया ताना व सहसंचालिका डॉ. तुम्बम रिवा जोमो के नेतृत्व में स्थानीय छात्रों, कवियों तथा चीन की सीमा के निकट से आए शायर अन्नु बशार, उपन्यासकार जोरंग सीराम ने समारोह को सफल बनाने में अपना पूरा योगदान दिया।

विनोद बब्बर

अब मैं सिर्फ हिंदी में ही बात करूँगा

अक्षय कुमार



हिंदी फिल्मों के सुपर स्टार अक्षय कुमार ने अब ये तय कर लिया है कि वे अब सिर्फ हिंदी में ही बात करेंगे। एक समाचार पत्र को दिए इंटरव्यू में अक्की ने कहा कि हिंदी बोलकर अपनी बात दूसरों को ज़्यादा बेहतर ढंग से समझाई जा सकती है।

हिंदी के बल पर दुनिया भर की दौलत और शोहरत कमाने वाले ज़्यादातर फ़िल्मी कलाकार परदे के बाहर हिंदी से दूर भागते हैं मगर खिलाड़ियों के खिलाड़ी अक्षय कुमार इनमें से नहीं हैं। वे माया नगरी के उन चमकते सितारों में से हैं जिनके लिए उनकी मातृभाषा सबसे ज़्यादा मायने रखती है।

हिंदुस्तान टाइम्स को हाल ही में दिए एक इंटरव्यू में अक्षय ने कहा कि पहले उन्हें भी अंग्रेज़ी में बात करना अच्छा लगता था मगर अब उन्हें ये एहसास हो गया है कि हिंदी में बात करना बेहतर है। अक्की ने कहा 'हिंदी में बोलकर अपनी बात आसानी से दूसरों को समझा सकते हैं। इसलिए मैंने ये तय किया है कि अब मैं सिर्फ हिंदी में ही बात करूँगा और यदि कभी, किसी कारण ऐसा नहीं हो पाया तो भी ज़्यादातर समय सिर्फ हिंदी का ही उपयोग करूँगा।'

हिंदी को वैश्विक स्वरूप दिलाने में हिंदी सिनेमा का बहुत बड़ा योगदान रहा है और हिंदी के कारण भारत के सिनेमा को वैश्विक पहचान मिली है। इसलिए फिल्मों की दुनिया हिंदी भाषा के योगदान को भुला नहीं सकती और हिंदी भाषा भी फिल्मों के सहारे दुनिया में फैल रही है। इसके बावजूद अमिताभ के अलावा अन्य कई कलाकार हिंदी से दूरी बरतते नज़र आते हैं। ऐसे में अक्षय ने जिस आत्मविश्वास के साथ हिंदी का स्वर बुलंद किया है उसकी सराहना की जानी चाहिए।

हिंदी होमपेज से साभार

“विश्व हिंदी सचिवालय के मॉरीशस कार्यालय में मुझे आकर अत्यंत प्रसन्नता हुई। यहाँ पूनम जी की कार्य शैली और हिंदी के प्रचार-प्रसार का ढंग अद्वितीय और आश्चर्य चकित करनेवाला है। हिंदी को बढ़ावा देने के लिए कार्यालय अत्यंत ही सराहनीय कार्य कर रहा है।”

21.11.11

डॉ. आर. के. दुबे

अध्यक्ष,

भोजपुरी अकादमी, बिहार सरकार, भारत

रामायण की कथाओं के अनुवाद का लोकार्पण



पारामारिबो । रामायण वह ग्रंथ है जो अति प्राचीन होते हुए भी सर्वथा नवीन है, सदियों से अनेक साहित्यकारों ने रामायण से प्रेरणा लेकर अनेक कृतियों की रचना की, अनेक प्रकार से व्याख्या की है और अभी भी कर रहे हैं । इसी शृंखला में एक मोती टांका है सूरीनाम की श्रीमती कार्मेन मरहई ने । 22 अक्टूबर 2011 को सांस्कृतिक संस्था माता गौरी के सभागार में श्रीमती मरहई द्वारा व्याख्या की गई रामायण की पाँच कथाओं का विमोचन किया गया । आप रामायण की सक्रिय प्रचारक हैं और पारामारिबो की सांस्कृतिक संस्था माता गौरी में रामायण कक्षाएँ भी लेती है जिसमें सब मिलकर रामायण पाठ करते हैं व श्रीमती मरहई उसकी व्याख्या करती हैं । सरल हृदया कार्मेन जी कर्म को प्रधान मानती हैं और यही कारण है कि आज के इस युग में जब प्रत्येक पुस्तक पर लेखक का चित्र व परिचय होना अवश्यभावी हो गया है, इस पुस्तक में कार्मेन जी ने अपना चित्र व परिचय कुछ नहीं दिया है । वह कहती हैं “मेरा उद्देश्य सिर्फ रामायण प्रचार-प्रसार है और वही आवश्यक है, मैं नहीं ।”

पुस्तक में बालकांड से प्रयाग महिमा, अयोध्याकांड से लक्ष्मण व निशादराज संवाद, अरण्यकांड से पंचवटी का राम-लक्ष्मण संवाद और शबरी माता की नवधा भक्ति तथा उत्तरकांड से पुरजन उपदेश की व्याख्या बहुत सरल ढंग से डच भाषा व हिंदी में की गई है । डच भाषा में लिखे आमुख में संक्षेप में रामायण का परिचय दिया गया है । यह पुस्तक जहाँ एक ओर गैर हिंदुस्तानियों को रामायण के विषय में ज्ञान देगी वहीं सूरीनाम में देवनागरी लिपि के प्रसार में भी सहायक होगी ।

उल्लेखनीय है कि पुस्तक का हिंदी टंकण श्रीमती मरहई की सुपुत्री रमोना औसान ने किया है और उन्होंने इस पुस्तक के लिए ही हिंदी टंकण सीखा ।

राजदूत की हिंदी व संस्कृति अधिकारी श्रीमती भावना सक्सेना ने इस अवसर पर रामायण की प्रासंगिकता पर चर्चा की और इसे सूरीनाम में हिंदी टंकण कार्यशाला की सफलता के रूप में देखते हुए मरहई परिवार व सूरीनाम के हिंदी प्रेमियों को बधाई दी । कार्यक्रम का कुशल संचालन युवाहिंदी छात्रा कुमारी मोती रंगीला ने किया । इस अवसर पर रामायण समाज ने सुमधुर रामायण वाचन भी किया ।

भावना सक्सेना की रिपोर्ट

थाईलैंड में हुआ बहुरंगी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी सम्मेलन

थाईलैंड की राजधानी बैंकॉक में हिंदी भाषा, साहित्य और संस्कृति के स्वर गूँजे । मौका था यहाँ हुए चतुर्थ अंतर्राष्ट्रीय हिंदी सम्मेलन का । हिंदी की सबसे पुरानी वेब-पत्रिका सृजनगाथा और छत्तीसगढ़ की साहित्यिक संस्था सृजन-सम्मान द्वारा आयोजित इस पाँच दिवसीय सम्मेलन में हिंदी के चुनिंदा साहित्यकार, पत्रकार और चिट्ठाकारों का सम्मान किया गया कुछ पुस्तकों का विमोचन हुआ और कला प्रदर्शनी भी लगाई गई ।

शुभारंभ समारोह को संबोधित करते हुए सृजनगाथा के संपादक और सम्मेलन के संयोजक श्री जयप्रकाश मानस ने संस्था द्वारा आयोजित पिछले तीन

हिंदी लेखक संघ की स्वर्ण जयंती

हिंदी लेखक संघ मॉरीशस ने अपनी स्वर्ण-जयंति के अवसर पर शनिवार 19 नवंबर, 2011 को आर्य सभा मॉरीशस (पोर्ट लुईस) में एक भव्य साहित्यिक समारोह का आयोजन किया ।

हिंदी लेखक संघ के प्रधान डॉ. लालदेव अंचराज ने अपने स्वागत भाषण में उपस्थित सभी जनों के प्रति अपना आभार प्रकट किया और कहा कि संघ की 50 वीं वर्षगांठ के अवसर पर वर्ष 2011 को हिंदी लेखक संघ का साहित्यिक वर्ष घोषित किया गया है । अतएव इस उपलक्ष्य में वर्ष भर कोई न कोई साहित्यिक गतिविधि आयोजित होती आ रही है । लालमटी में छात्रों के साथ छात्र दिवस का आयोजन किया गया । इंदिरा गाँधी भारतीय सांस्कृतिक केंद्र में ‘विदेशों में हिंदी साहित्य का सर्वेक्षण एवं मूल्यांकन’ विषय पर गोष्ठी हुई । साथ ही हिंदी भवन लॉग माउटेन में ‘हमारे पूर्वजों की याद में’ लोक-गीत-नृत्य, संवाद तथा नृत्य-नाटिका कार्यक्रम आयोजित किए गए ।

इस अवसर पर विशेष रूप से पटना के भोजपुरी संस्थान के प्रधान प्रो. रविकांत दुबे जी तथा मॉरीशस के विश्व हिंदी सचिवालय की महासचिव श्रीमती पूनम जुनेजा उपस्थित थे । मॉरीशस भोजपुरी संस्थान की निदेशिका डॉ. सरिता बुधू ने प्रो. रविकांत दुबे जी का परिचय दिया और भोजपुरी भाषा के महत्व की चर्चा की तथा श्रीमती पूनम जुनेजा जी का परिचय हिंदी लेखक संघ के मान्य प्रधान श्री इंद्रदेव भोला इंद्रनाथ ने दिया । तत्पश्चात प्रो. दुबे एवं श्रीमती जुनेजा ने अपने-अपने भाषणों में कहा कि इस देश में आकर खुशी इस बात से हुई है कि यहाँ हिंदी-संस्कृति जीवित है और हिंदी व भोजपुरी भाषा फल-फूल रही है । यह अंतर नहीं लगता कि वे भारत से बाहर किसी देश में आए हैं । श्रीमती जुनेजा ने कहा कि विदेशों में मॉरीशस ही वह देश है जहाँ हिंदी का विपुल और सशक्त रूप से साहित्य-सृजन हुआ है ।

संघ द्वारा प्रकाशित तीन पुस्तकों का लोकार्पण (मॉरीशस का बाल नाटक संग्रह, डॉ. मुनीश्वरला चिंतामणी स्मृति ग्रंथ और पं. धर्मवीर घूरा स्मृति ग्रंथ) प्रो. रविकांत दुबे द्वारा हुआ और विश्व हिंदी सचिवालय की महासचिव श्रीमती पूनम जुनेजा जी द्वारा अन्य तीन पुस्तकों (मॉरीशस की 25 बाल कहानियाँ, बच्चे कितने अच्छे और प्रतिध्वनियाँ) का लोकार्पण हुआ ।

अंत में संघ के कर्मठ हिंदी सेवियों को हिंदी सेवा सम्मान प्रदान किया गया तथा निबंध प्रतियोगिता के विजेताओं को पुरस्कृत किया गया ।

मॉरीशस से इंद्रदेव भोला इंद्रनाथ की रिपोर्ट

अंतर्राष्ट्रीय हिंदी सम्मेलनों की जानकारी दी । उन्होंने कहा कि थाईलैंड में आयोजित इस सम्मेलन से हिंदी और थाई संस्कृति एक दूसरे के करीब आ सकेंगी और हिंदी को यहाँ के वैश्विक वातावरण में प्रतिष्ठापित करने के लिए सकारात्मक वातावरण बनेगा ।

सम्मेलन में वरिष्ठ कवि व दुनिया इन दिनों के प्रधान संपादक डॉ. सुधीर सक्सेना को उनकी कविता संग्रह ‘रात जब चंद्रमा बजाता है’ तथा स्त्री विमर्श के लिए प्रतिबद्ध लेखिका व आउटलुक, हिंदी की सहायक संपादिका, गीताश्री को उनकी संपादित कृति ‘नागपाश में स्त्री’ तथा युवा पत्रकार, दैनिक भारत भास्कर (रायपुर) के संपादक श्री संदीप तिवारी ‘राज’ की पहली कृति ‘ये आईना मुझे बूढ़ा नहीं होने देता’ के लिए वर्ष 2011 के सृजनगाथा सम्मान से नवाज़ा गया । इन लोगों का चयन देश के चुनिंदा 1000 युवा साहित्यकार-पाठकों की राय के आधार पर किया गया था ।

इनके अलावा श्री रवींद्र प्रभात, नुक्कड़ ब्लॉग की कथा लेखिका अलका सैनी और उड़िया भाषा के अनुवादक ब्लॉगर दिनेश कुमार माली को चिट्ठाकारिता के लिए, आधारशिला के संपादक दिवाकर भट्ट को लघु पत्रकारिता के लिए तथा बीपीएन टाइम्स के संपादक ताहिर हैदरी, पीपुल्स समाचार दैनिक के युवा पत्रकार ब्रजेश शुक्ला को पत्रकारिता के लिए सृजनश्री सम्मान से अलंकृत किया गया । इस बहुरंगी सम्मेलन में हिंदी की कुछ कृतियों का विमोचन भी हुआ ।

हिंदी होमपेज से साभार

पंजाब विश्वविद्यालय में विदेशी विद्यार्थी कर सकेंगे हिंदी की पढ़ाई

हिंदी सीखने के इच्छुक विदेशियों के लिए अब भारत के सबसे पुराने विश्वविद्यालय में एक नया पाठ्यक्रम शुरू करने की योजना बनाई जा रही है। चंडीगढ़ के पंजाब विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग ने इस बारे में एक प्रस्ताव तैयार किया है।

पंजाब विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग के सत्यपाल सहगल ने बताया कि हर साल बड़ी संख्या में विदेशी नागरिक हिंदी के पाठ्यक्रम के लिए विश्वविद्यालय में संपर्क करते हैं मगर इस तरह का कोई पाठ्यक्रम न होने के कारण उन्हें निराश होना पड़ता है।

उन्होंने बताया कि विदेशों में रहने वाले विद्यार्थियों के मन में भारत और हिंदी के प्रति जिज्ञासा लगातार बढ़ रही है, लेकिन इन सबके लिए कोई एक पाठ्यक्रम निर्धारित नहीं किया जा सकता। उनमें से कुछ लोग ऐसे हैं जो हिंदी समझते हैं लेकिन कई ऐसे भी होते हैं जो हिंदी बिल्कुल नहीं जानते मगर हिंदी सीखना भी चाहते हैं और हिंदी में विशेष योग्यता भी हासिल करना चाहते हैं। ऐसे में इनके लिए विशेष पाठ्यक्रम की आवश्यकता होगी। सहगल बताते हैं कि इस दिशा में हिंदी विभाग ने काफ़ी काम कर लिया है और उसे सिर्फ विश्वविद्यालय प्रशासन की स्वीकृति का इंतज़ार है।

उल्लेखनीय है कि पंजाब विश्वविद्यालय भारत के सबसे पुराने विश्वविद्यालयों में से एक है। यहाँ का हिंदी विभाग पिछले कुछ समय से विदेशों में रहने वाले हिंदी प्रेमियों के बीच काफ़ी चर्चा में है। फ़ेसबुक के माध्यम से भी ये विभाग सैकड़ों हिंदी प्रेमियों से जुड़ा हुआ है। कुछ समय पहले इसराइल के *तेल अवीव विश्वविद्यालय* के हिंदी विद्यार्थी यहाँ अध्ययन यात्रा पर आए थे। उस समय भी यहाँ विदेशी विद्यार्थियों के लिए हिंदी के पाठ्यक्रम को लेकर चर्चा हुई थी। इसराइल के हिंदी प्राध्यापक जीनेडी श्लोमपर ने भी इसका समर्थन किया था।

फ़िलहाल मानव संसाधन विकास मंत्रालय का केंद्रीय हिंदी संस्थान भारत और कुछ अन्य देशों में विदेशी हिंदी प्रेमियों और विद्यार्थियों के लिए हिंदी के पाठ्यक्रमों का संचालन करता है। पंजाब में इस तरह का पाठ्यक्रम शुरू होने से हिंदी सीखने के इच्छुक लोगों को और विकल्प मिल सकेंगे।

हिंदी होमपेज से साभार

‘राष्ट्रिय एकता का सर्वश्रेष्ठ माध्यम हिंदी है। हिंदी वह धागा है जो विभिन्न मातृ भाषाओं रूपां फूलों को पिरोकर भारत भाषा के एक सुंदर हार का सृजन करेगा।’

जाकिर हुसैन

केंद्रीय हिंदी संस्थान करेगा 14 हिंदी सेवियों का सम्मान



हिंदी के विकास, प्रसार और प्रचार में योगदान देने वाले भारतीय और विदेशियों को केंद्रीय हिंदी संस्थान हिंदी साहित्य सेवी सम्मान से पुरस्कृत करेगा। सात श्रेणियों में दिए जाने वाले इस पुरस्कार में चयनित हिंदी सेवियों को राष्ट्रपति भवन में आयोजित समारोह में एक लाख रुपये नकद के साथ प्रमाण पत्र दिया जाएगा। केंद्रीय हिंदी संस्थान के स्वर्ण जयंती में पिछले दो साल से लंबित हिंदी साहित्य सेवी सम्मान पुरस्कारों की घोषणा उपाध्यक्ष

अशोक चक्रधर ने की। पत्रकार वार्ता में उन्होंने कहा कि केंद्रीय हिंदी शिक्षण मंडल के स्वर्ण जयंती के उपलक्ष्य में आगरा में भी जयंती समारोह मनाया जाएगा जिसमें भारतीय के साथ विदेशी हिंदी साहित्यकार शिरकत करेंगे।

संस्थान द्वारा साल 2008 और 2009 के लिए सात श्रेणियों में पुरस्कारों की घोषणा की गई है। इसमें हिंदी के प्रचार-प्रसार और हिंदी प्रशिक्षण में उल्लेखनीय योगदान के लिए गंगाशरण सिंह पुरस्कार गिरीश कर्नाड, माझुरी छेडा और बल्ली सिंह चीमा, वाई लक्ष्मी प्रसाद, मधुर मंडारकर, दामोदर खडसे और चमनलाल सपू को दिया जाएगा। हिंदी पत्रकारिता तथा रचनात्मक साहित्य के क्षेत्र में काम करने के लिए गणेश शंकर विद्यार्थी पुरस्कार से पंकज पचौरी, विनोद अग्निहोत्री, ब्रजमोहन बख्शी और बलराम को पुरस्कृत किया जाएगा। वैज्ञानिक एवं तकनीकी साहित्य और उपकरण विकास के लिए आत्माराम पुरस्कार प्रो. यशपाल, मो. खलील, सुभाष लखेडा और नरेंद्र सहगल को दिया जाएगा।

हिंदी के विकास से संबंधित सृजनात्मक-आलोचनात्मक क्षेत्र में काम करने के लिए सुब्रह्मण्यम भारती पुरस्कार नंद किशोर आचार्य, विजय बहादुर सिंह, अजीत कुमार और गोपाल चतुर्वेदी को दिया जाएगा। हिंदी में खोज व यात्रा विवरण के लिए महापंडित राहुल सांकृत्यायन पुरस्कार गोपाल राय, डॉ. विमलेश कांति वर्मा, प्रो. हरिमोहन और डॉ. विक्रम सिंह को दिया जाएगा। विदेशों में हिंदी के प्रचार-प्रसार में काम करने के लिए डॉ. जार्ज ग्रियर्सन पुरस्कार यूएसए के हरमन बैन ऑलफन और कोरिया के ली जंग हो को दिया जाएगा। सातवीं और अंतिम श्रेणी में भारतीय मूल के विद्वान को विदेशों में हिंदी प्रचार के लिए पूर्णिमा वर्मन और सुरेंद्र गंभीर को सम्मानित किया जाएगा।

आगरा से के. सिंह की रिपोर्ट

सूरीनाम में हिंदी दिवस का उपहार

सूरीनाम के हिंदी प्रेमियों को इस हिंदी दिवस पर एक अनूठा उपहार मिला। हिंदी भाषियों को ये सौगात यहाँ की राजधानी पारामारीबो में स्थित सूरीनाम सांस्कृतिक केंद्र के पुस्तकालय में हिंदी भाग के रूप में मिली। इस हिंदी भाग का औपचारिक उद्घाटन भारत के राजदूत श्री कंवलजीत सिंह सोढ़ी और सूरीनाम सांस्कृतिक केंद्र की निदेशिका श्रीमती नाडिया बेकर ने 5 अक्टूबर को किया।

सूरीनाम के लोग अब हिंदी से और अधिक आत्मीयता से जुड़ सकेंगे। यहाँ के भारतीय दूतावास के प्रयासों के चलते सूरीनाम की साहित्यिक, सांस्कृतिक और बौद्धिक गतिविधियों के प्रमुख केंद्र सूरीनाम सांस्कृतिक केंद्र में अब हिंदी का विशेष भाग खोला गया है।

इस अवसर पर आयोजित कार्यक्रम को संबोधित करते हुए केंद्र की निदेशिका ने हिंदी के इस भाग की स्थापना के लिए भारतीय दूतावास की सराहना की। हिंदी के इस विशेष खंड की जानकारी देते हुए राजदूतावास की हिंदी व संस्कृति अधिकारी श्रीमती भावना सक्सेना ने बताया कि यह पुस्तक संग्रह हिंदी के पाठकों के साथ-साथ हिंदी सीखने के इच्छुक लोगों के लिए बहुत उपयोगी साबित होगा।

कार्यक्रम में उपस्थित हिंदी के विद्वान डॉ. नारायण दत्त गंगाराम पांडे जी ने कहा यहाँ हिंदी पुस्तकें उपलब्ध होना बहुत हर्ष की बात है। इसके लिए उन्होंने केंद्र को बधाई दी।

भावना सक्सेना की रिपोर्ट

कवि महेंद्र भटनागर की 108 कविताओं के फ्रेंच-काव्यानुवाद की एन्थोलॉजी

द्विभाषिक यशस्वी कवि महेंद्र भटनागर की 108 कविताओं के फ्रेंच काव्यानुवादों की एन्थोलॉजी (A Modern Indian Poet, Dr. Mahendra Bhatnagar – Un Poète Indien Et Moderne) का प्रकाशन हुआ है। यह फ्रेंच-काव्यानुवाद बर्दवान विश्वविद्यालय, दुर्गापुर की पूर्व फ्रेंच प्रोफेसर, अंग्रेज़ी-बांग्ला की लब्ध-प्रतिष्ठित कवयित्री, निबंध-लेखिका एवं आलोचक श्रीमती पूर्णिमा राय ने किया है।

इस फ्रेंच-काव्यानुवाद के अतिरिक्त जापानी भाषा में भी काव्यानुवाद उपलब्ध है। श्री सेइज़ि हीनो का जापानी काव्यानुवाद 'जेन्दाइशि केंक्यु' नामक प्रसिद्ध साहित्यिक पत्रिका में क्रमशः प्रकाशित हो रहा है।

फ्रेंच काव्यानुवाद के इस विशिष्ट संकलन पर फ्रेंच विद्वानों द्वारा फ्रेंच में लिखित समीक्षात्मक आलेख 'Poet Mahendra Bhatnagar: His Mind & Art' नामक आलोचना-ग्रंथ में समाविष्ट हैं।

इस महत्वपूर्ण उपलब्धि पर डॉ. महेंद्र भटनागर को हार्दिक बधाई।

सृजनगाथा

‘धरती करे गुहार’ का लोकार्पण समारोह

पंजाबी साहित्य के लोकप्रिय हस्ताक्षर श्री मंगा बासी के काव्य-नाटक ‘धरती करे गुहार’ का विमोचन साउथ एशियन लिटरेरी सोसाइटी तथा बी. सी. पंजाबी कलचरल फ़ाउंडेशन द्वारा रविवार 30 अक्टूबर को गुरु नानक निवास, सरी में सोतसाह संपन्न हुआ। यह काव्य-नाटक मंगा बासी की मूल पंजाबी कृति का हिंदी अनुवाद है जिसे चेतना प्रकाशन, लुधियाना ने प्रकाशित किया है। इस पुस्तक में कवि ने संवाद शैली के हवाले से धरती में पसरी पड़ी अकल्पनीय पर्यावरण समस्याओं को परंपरागत भारतीय शिव-पार्वती मिथ के सहारे रूपायित किया है। यह काव्य नाटक 79 पृष्ठों तथा 10 दृश्यों में समाहित है।

श्रीनाथ प्रसाद द्विवेदी की रिपोर्ट

‘स्मृति मंजूषा’ और ‘भीगे पंख’ का लोकार्पण

‘ज्ञान प्रसार संस्थान’ के तत्वावधान में नीरजा द्विवेदी के संस्मरण ‘स्मृति मंजूषा’ एवं महेश चन्द्र द्विवेदी के उपन्यास ‘भीगे पंख’ का लोकार्पण 25 सितंबर, 2011 को सिटी मांटेसरी स्कूल, गोमतीनगर, लखनऊ के भव्य सभागार में संपन्न हुआ। ‘स्मृति मंजूषा’ के लेख उनके अमेरिका एवं इंग्लैंड के प्रवास के दौरान घटित ऐसी घटनाओं के संस्मरण हैं, जो एक सामान्य भारतीय के लिए अनोखी अथवा शिक्षाप्रद हैं। ‘भीगे पंख’ उपन्यास में ग्रामीण परिवेश का एवं विशेषतः निम्न वर्ग की सामाजिक स्थिति का वर्णन अद्भुत है। श्री के. विक्रम राव ने अध्यक्षीय भाषण में दोनों पुस्तकों को अपने-अपने क्षेत्र की विशेष उपलब्धि बताते हुए उन्हें पठनीय एवं संग्रहणीय बताया।



प्रो. यर्लगड्डा लक्ष्मी प्रसाद, पूर्व सांसद, अध्यक्ष, हिंदी अकादेमी, आंध्र प्रदेश, सांसद, भारत एवं श्री मंडली बुद्ध प्रसाद, पूर्व मंत्री, आंध्र प्रदेश सरकार को पत्रिका प्रदान करती श्रीमती पूनम जुनेजा



दाएँ से प्रो. रविकांत दुबे, अध्यक्ष, भोजपुरी अकादमी, बिहार सरकार, श्रीमती पूनम जुनेजा, महासचिव, विश्व हिंदी सचिवालय, सरिता बुधू अध्यक्ष, भोजपुरी संस्थान, श्री गंगाधरसिंह सुखलाल, उपमहासचिव, विश्व हिंदी सचिवालय



सचिवालय के कर्मचारियों व अधिकारियों के साथ प्रो. रामप्रकाश, सांसद, भारत



सचिवालय के प्रांगण में हिंदी लेखक संघ के सदस्य, प्रो. यर्लगड्डा लक्ष्मी प्रसाद, श्री मंडली बुद्ध प्रसाद सहित अन्य अतिथि गण

संपादकीय



उद्देश्य अलग है...

विश्व हिंदी समाचार के इस अंक का प्रथम पृष्ठ देखकर आप में से बहुत लोग चौंक गए होंगे । जो लोग हिंदी को 'खिचड़ी' रूप देने का प्रथम दोषी हिंदी फ़िल्मों अथवा संगीत को मानते हैं अथवा जो फ़िल्मी कलाकारों से इस बात के लिए चिढ़ते हैं कि ये 'हिंदी की रोटी खाकर अंग्रेज़ी की गुलामी करते हैं'... उनको हमारा प्रयास 'धृष्टता' की सीमाओं को छूता हुआ दिखेगा । सच मानिए ... इस दृष्टिकोण से देखने पर हमारे विचार भी आपके विचारों से जुड़ते हैं... परंतु आज दृष्टिकोण अलग है...

हिंदी भाषा के सैनिकों की जब बात होती है तो बहुधा आदिकाल से लेकर आज तक के साहित्यकारों, हिंदी सेवियों, आलोचकों, आंदोलन-प्रणेताओं के समक्ष हिंदी संसार सबसे पहले नतमस्तक होता है । स्वाभाविक है... उचित भी । परंतु...

आप में से कुछ लोग जानते होंगे कि हिंदी प्राध्यापक होने के साथ साथ मैं रेडियो-टी.वी. पर खबरें पढ़ता हूँ... पुरानी फ़िल्मों आदि पर आधारित कुछ कार्यक्रम भी प्रस्तुत करता रहता हूँ, ग़ज़लों का बड़ा शौकीन हूँ । इस अनुभव के चलते मेरे पास कुछ उदाहरण हैं जो सड़कों पर, दुकानों में या कभी कभी मेरे घर में ही मुझसे टकराते हैं । इन उदाहरणों में आज तक किसी ने मुझसे कभी भी साहित्य, काव्यशास्त्र, हिंदी-उर्दू-हिंदुस्तानी भेद, पारिभाषिक शब्दावली के बारे में प्रश्न अथवा टिप्पणी नहीं की । कभी नहीं ! इनकी बातें होती हैं "देव आनंद की वह फ़िल्म बहुत दिनों से देखने का मन था" अथवा "शम्मी कपूर जब अपने अंदाज़ में अमुक गीत पर नाचते हैं तो दिल खुश हो जाता है..." आदि आदि... मेरी माँ ही को आरंभ में यह समझाना कठिन हुआ कि विश्व हिंदी सचिवालय का अर्थ क्या है परंतु हमारी टी.वी. पर आने वाले हर फ़िल्म हर सीरियल का शीर्षक उन्हें याद होता है । मेरे इन उदाहरणों का न तो धर्म होता है... न उम्र, न डिग्री, न भाषाई विचार... ये सभी मेरे लिए एक होते हैं । इस रूप में कि उन बातों को समझते हैं जो मैं अथवा देव आनंद, शम्मी कपूर, से लेकर शाहरुख खान और सीरियल के अभिनेता हिंदी में बोलते हैं ।

मेरा पूरा विश्वास यह भी है कि डॉ. जयंती प्रसाद नौटियाल ने 2007 में अपने शोध के आधार पर जब यह निर्णय निकाला कि विश्व में हिंदी बोलने/समझने वालों की संख्या कुल 1,023,374,637 है और उनमें आठ लाख मॉरीशस में हैं तो उन्होंने उन आठ लाख अथवा उस कुल 1,023,374,637 में मेरे इन उदाहरणों को भी लिया होगा । (http://www.abhivyakti-hindi.org/snibandh/hindi_diwas/hindiphirpahlestanper.htm)

इस प्रकार के सैकड़ों शोध कार्यों से आज एक बात तय है... वह बात जो हमारे अस्तित्व का आधार है... कि हिंदी भारत, हिंदी प्रदेशों अथवा भारतीयों मात्र की भाषा नहीं है । हिंदी विश्व की भाषा है ! अब यदि इस संदर्भ में विश्व हिंदी दिवस 2011 के उपलक्ष्य में विश्व हिंदी सचिवालय की अतिथि विदूषी प्रो. किम वू जो के शब्दों को उद्धृत करें "भारत से बाहर के हिंदी भाषी हिंदी को विश्वभाषा बनाते हैं..." तो स्पष्ट होता है कि हिंदी को विश्व भाषा बनाने वालों में विश्व के उन 106 देशों में करोड़ों लोग हैं जो मेरे उदाहरणों के समान हिंदी को निराला की भाषा के रूप में नहीं राज कपूर, देव आनंद, अमिताभ बच्चन, शाहरुख, ऋतिक की भाषा के रूप में जानते हैं, पहचानते हैं, समझते हैं, बोलते हैं अथवा बोलने का प्रयास करते हैं । इसका तात्पर्य यह कदापि नहीं है कि विश्व भाषा हिंदी के लिए कवियों, आलोचकों, पारिभाषिक शब्दावली का कोई महत्व नहीं है । यह तो हिंदी के आधार हैं । परंतु जब बात होती है एक सरल साधारण संपर्क, संप्रेषण अथवा मनोरंजन की भाषा के रूप में हिंदी की, तो मापदंड भिन्न हो जाते हैं ।

हिंदी भारत की अधिकांश आबादी की मातृ भाषा है । वहाँ की स्थिति के बारे में जब सोचते हैं तो लोगों का हिंदी बोलना स्वाभाविक लगता है... जब बाज़ार में सब्जी, राशन, रिक्शा, लस्सी वाले से हिंदी में बोलने की संभावना हो तो भाषा की जड़ों को अपनी ऊर्जा दैनिक आवश्यकताओं-क्रियाकलापों से ही मिल जाती है । लेकिन विदेशों अथवा भारत के ही कुछ क्षेत्रों में स्थिति ऊपर वर्णित भारतीय स्थिति से काफ़ी भिन्न है और इन देशों में हिंदी के जिन सेनानियों के समक्ष नतमस्तक होना चाहिए वे वही कलाकार हैं जिनको हमने इस पत्र के प्रथम पृष्ठ पर श्रद्धांजलि दी है...

न सिर्फ भाषा के प्रचार में बल्कि शिक्षण में भी इन फ़िल्मों, इन कलाकारों का योगदान असीम है । आज भारत से बाहर जहाँ भी हिंदी द्वितीय भाषा के रूप में सिखाई जाती है वहाँ की शिक्षण प्रणाली में हिंदी फ़िल्मों, गीतों आदि का शैक्षणिक महत्व स्वीकारा गया है ।

यहाँ स्पष्ट कर देता हूँ... मैं इस बात का पक्षधर नहीं हूँ कि किसी चीज़ में बड़प्पन तब आता है जब पश्चिम उसे स्वीकारता है चाहे वह भाषा हो, हीरो अथवा फ़िल्म । मेरे लिए पश्चिम की स्वीकृति बड़प्पन का नहीं मेरी भाषा के फैलाव का प्रतीक है । मैं उपनिवेशवादोत्तर उस मानसिकता का शिकार नहीं होना चाहता जो मेरे मन में ऐसी भावनाएँ पैदा करे कि अगर पश्चिम मेरी किसी चीज़ को स्वीकारता है तो उसके पीछे भी कोई उपनिवेशवादी कारण है । कम से कम नाताली दी लूसियो के गीतों से तो ऐसा नहीं लगता । वैसे भी जब हिंदी के फैलाव की बात होती है संकेत केवल पश्चिम की ओर नहीं, पूर्व (चीन, जापान, कोरिया) अफ़्रिका और मध्यपूर्व की ओर भी होता है । यू-ट्यूब पर थोड़ा सर्च करें, चीनी से लेकर अफ़्रिकी लोग आपको हिंदी गाने गाते हुए मिल जाएँगे ।

अधिक नहीं कहूँगा । यू-ट्यूब पर एक गीत का लिंक देता हूँ... (<http://www.youtube.com/watch?v=tv242qOnHJA>) । इसे देखकर यदि आपका दिल खुश हो कि हमारे 'हिंदी भाषी' की धारणा अथवा छवि से अलग दिखने वाले ये लोग... दिल से ये गीत गा पा रहे हैं... हिंदी उनके होठों पर थिरक रही है और दो लाख से अधिक लोग इस विडियो को देख चुके हैं । तो आइए आज हम इस कार्य को अंजाम देने वाले सभी हिंदी के उन सैनिकों के योगदान के समक्ष नतमस्तक होते हैं जो हमारे बीच नहीं रहे और शम्मी कपूर, जगजीत सिंह, देव आनंद, भूपेन हज़ारिका को श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं ।

श्री गंगाधरसिंह सुखलाल

विश्व हिंदी सचिवालय

अंतर्राष्ट्रीय लोगो प्रतियोगिता

विश्व हिंदी सचिवालय लोगो प्रतियोगिता में भाग लेने वाले सभी प्रतिभागियों को सूचित करता है कि प्रतियोगिता में प्रतिभागिता की अंतिम तिथि 30 अप्रैल, 2012 तक कर दी गई है । परंतु पहले से भेजी गई प्रविष्टियाँ भी मान्य रहेंगी ।

यदि प्रतिभागी गण अपनी प्रविष्टियाँ आशोधन (Modification) सहित पुनः भेजना चाहते हैं तो उनसे अनुरोध है कि वे 30 अप्रैल, 2012 तक अपनी नई प्रविष्टि एक अनुरोध पत्र सहित भेजने की कृपा करें ।

अधिक जानकारी के लिए कृपया संपर्क करें :

फ़ोन : 230-676 1196

फ़ैक्स : 230-676 1224

ई-मेल : whsmauritus@gmail.com ,

whsmauritus@intnet.mu